म.प्र. राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
सा विद्या या विमुक्तये

शिक्षा का अधिकार
सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें
मध्य प्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल

TESS India

भाषा और साक्षरता

आनंद के लिए पढ़ना

भारत में विद्यालय समर्थित शिक्षक शिक्षा

www.TESS-India.edu.in

http://creativecommons.org/licenses/

The Open University

UKaid from the British people

एस.आर.मोहन्ती
अपर मुख्य सचिव

अ.शा.पत्र क्र R.S.K/10.............
दूरभाष कार्यालय - 0755-4251330
मध्यप्रदेश शासन
स्कूल शिक्षा विभाग
मंत्रालय, वल्लभ भवन, भोपाल-462 004
भोपाल, दिनांक 20-1-2016

संदेश

प्रिय शिक्षक साथियों,

बच्चों की शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण और रोचक बनाने के लिए स्कूल शिक्षा विभाग निरन्तर प्रयासरत् है। आप सभी के प्रयासों से शिक्षकों के शिक्षण कौशल में भी निखार आया है और शालाओं में कक्षा शिक्षण भी आंनददायी तथा बेहतर हुआ है।

इसी दिशा में शिक्षकों को बाल केन्द्रित शिक्षण की ओर उन्मुख करने और शिक्षक प्रशिक्षण की गुणवत्ता को बेहतर बनाने के उद्‌देश्यों को लेकर, TESS India द्वारा मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) का विकास किया गया हैं। इनका उपयोग शिक्षण कार्य में सहजता व सुगमतापूर्वक किया जा सकता है। आशा है कि ये संसाधन, शिक्षकों एवं शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन और क्षमतावर्द्धन में लाभकारी और उपयोगी सिद्ध होंगे।

राज्य शिक्षा केन्द्र के संयुक्त तत्वाधान में TESS India द्वारा स्थानीय भाषा में तैयार किये गये मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) को www.educationportal.mp.gov.in पर भी उपलब्ध कराया गया हैं। आशा है इन संसाधनों के उपयोग से प्रदेश के शिक्षक और शिक्षक प्रशिक्षक लाभान्वित होंगे और कक्षाओं में पठन पाठन को रूचिकर और गुणवत्तायुक्त बनाने में मदद मिलेगी।
शुभकामनाओं सहित,

(एस.आर.मोहन्ती)

दीप्ति गौड मुकर्जी
आयुक्त
राज्य शिक्षा केन्द्र एवं
सचिव
मध्यप्रदेश शासन
स्कूल शिक्षा विभाग

अर्द्ध शा. पत्र क्र. : 8
दिनांक : 12-1-16
पुस्तक भवन, वी-विंग
अरेरा हिल्स, भोपाल-462011
फोन : (का.) 2768392
फैक्स : (0755) 2552363
वेबसाइट : www.educationportal.mp.gov.in
ई-मेल : rskcommmp@nic.in

संदेश

प्रिय शिक्षक साथियों,

सभी बच्चों को रूचिकर और बाल केन्द्रित शिक्षा उपलब्ध हो इसके लिए आवश्यक है कि हमारे शिक्षकों को शिक्षण की नवीनतम तकनीकों और शिक्षण विधियों से परिचित कराया जाए साथ ही इन तकनीकों के उपयोग के लिए उन्हे प्रोत्साहित भी किया जाए। TESS India द्वारा तैयार किये गये मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) के उपयोग से शिक्षक शिक्षण प्रविधि के व्यावहारिक उपयोग को सीख सकते हैं। इनकी सहायता से शिक्षक न केवल विषय वस्तु को सुगमता पूर्वक पढ़ा सकते हैं बल्कि पठन पाठन की इस प्रक्रिया में बच्चों की अधिक से अधिक सहभागिता भी सुनिश्चित कर सकते हैं।

राज्य शिक्षा केन्द्र स्कूल शिक्षा विभाग ने स्थानीय भाषा में तैयार किये गये इन मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) को अपने पोर्टल www.educationportal.mp.gov.in पर भी उपलब्ध कराया है।

आशा हैं, कि आप इन संसाधनों का कक्षा शिक्षण के दौरान नियमित रूप से उपयोग करेंगे और अपने शिक्षण कौशल में वृद्धि करते हुए बच्चों की पढ़ाई को आनंददायक बनाने का प्रयास करेंगे।

शुभकामनाओं सहित,

(दीप्ति गौड मुकर्जी)

शिक्षा का अधिकार
सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

टेस–इण्डिया स्थानीयकृत ओईआर निर्माण में सहयोग

मार्गदर्शन एवं समीक्षा :
श्रीमती स्वाति मीणा नायक, अपर मिशन संचालक, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. एच. के. सेनापति, प्राचार्य, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. ओ.पी.शर्मा, अपर संचालक, मध्यप्रदेश एससीईआरटी
डॉ. अशोक कुमार पारीक उपसंचालक, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री आर. पी. त्रिपाठी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
प्रो.जयदीप मंडल, विभागाध्यक्ष विज्ञान एवं गणित शिक्षा संकाय, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. आर. रायजादा, सहप्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष विस्तार शिक्षा, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. वी.जी. जाधव, से.नि. प्राध्यापक भौतिक, एनसीईआरटी
डॉ. के. बी. सुब्रमण्यम से.नि. प्राध्यापक गणित, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. आई. पी. अग्रवाल से.नि. प्राध्यापक विज्ञान, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. अश्विनी गर्ग सहा. प्राध्यापक गणित संकाय, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. एल. के. तिवारी, सहप्राध्यापक विज्ञान, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
श्री एल.एस.चौहान, सहा. प्राध्यापक विज्ञान, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. श्रुति त्रिपाठी, सहा. प्राध्यापक अंग्रेजी, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. रजनी थपलियाल, व्याख्याता अंग्रेजी, ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. मधु जैन, व्याख्याता शास. उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, भोपाल
डॉ. सुशोवन बनिक, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. सौरभ कुमार मिश्रा, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
श्री. अजी थॉमस, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. राजीव कुमार जैन, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
स्थानीयकरण :
भाषा एवं साक्षरता
डॉ. लोकेश खरे, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. एम.एल. उपाध्याय से.नि. व्याख्याता शास. उत्कृष्ट उ.मा.विद्यालय मुरैना
श्री रामगोपाल रायकवार ,कनि. व्याख्याता, डाइट कुण्डेश्वर, टीकमगढ़
डॉ. दीपक जैन अध्यापक, शास. उत्कृष्ट उ.मा.विद्यालय क्र 1 टीकमगढ़
अंग्रेजी
श्री राजेन्द्र कुमार पाण्डेय, प्राचार्य, ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्रीमती कमलेश शर्मा. डायरेक्टर , ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री हेमंत शर्मा, प्राचार्य, ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री मनोज कुमार गुहा वरि. व्याख्याता, एससीईआरटी. मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. एफ.एस.खान, वरि.व्याख्याता, प्रगत शैक्षिक अध्ययन संस्थान (आईएएसई) भोपाल
श्री सुदीप दास, प्राचार्य, शास.उ.मा.विद्यालय दालौदा, मन्दसौर
श्रीमती संगीता सक्सेना, व्याख्याता, ,शास.कस्तूरबा कन्या उ.मा.विद्यालय भोपाल
गणित
श्री बी.बी. पी. गुप्ता, समन्वयक गणित, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री ए. एच. खान प्राचार्य शास.उ.मा.विद्यालय रामाकोना, छिंदवाड़ा
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद गुप्त , प्राचार्य शास. जीवाजी ऑब्जर्वेटरी उज्जैन
डॉ.आर,सी. उपाध्याय, वरि. व्याख्याता, डाइट, सतना
डॉ. सीमा जैन, व्याख्याता, शास. कन्या उ.मा.विद्यालय गोविन्दपुरा, भोपाल
श्री सुशील कुमार शर्मा, शिक्षक, शास. लक्ष्मी मंडी उ.मा.विद्यालय, अशोका गार्डन, भोपाल
विज्ञान
डॉ. अशोक कुमार पारीक उपसंचालक, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल
डॉ. सुसम्मा जॉनसन, व्याख्याता एस.आई.एस.ई. जबलपुर मध्यप्रदेश
डॉ.सुबोध सक्सैना, समन्वयक एससीईआरटी मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल
श्री आर. पी. त्रिपाठी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री अरूण भार्गव, वरि. व्याख्याता, एससीईआरटी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल
श्रीमती सुषमा भट्ट, वरि.व्याख्याता, एससीईआरटी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री ब्रजेश सक्सेना, प्राचार्य, एससीईआरटी ,मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. रेहाना सिद्दकी से.नि. व्याख्याता सेन्ट फ्रांसिस हा. से. स्कूल भोपाल

*TESS-India (*विद्यालय समर्थित शिक्षक शिक्षा*)* का उद्देश्य मुक्त शैक्षिक संसाधनों की सहायता से भारत में प्रारंभिक और सेकेण्डरी शिक्षकों के कक्षा अभ्यास व कक्षा निष्पादन को सुधारना है जिसमें वे इन संसाधनों की सहायता से विद्यार्थी-केंद्रित, सहभागी दृष्टिकोणों का विकास कर सकें। टेस इंडिया के मुक्त शैक्षिक संसाधन शिक्षकों के लिए स्कूल पाठ्य पुस्तक के अतिरिक्त,सहयोगी पुस्तिका या संसाधन की तरह हैं। इसमें शिक्षकों के लिए कुछ गतिविधियां दी गई हैं जिन्हे वे कक्षाओ में विद्यार्थियों के साथ प्रयोग में ला सकते हैं, इसके साथ साथ कुछ केस स्टडी दी गई हैं जो यह बताती हैं कि कैसे अन्य शिक्षकों ने पाठ्य विषय को कक्षाओं में पढ़ाया और अपनी विषय संबंधी जानकारियों को बढ़ाने तथा पाठ योजनाओं को तैयार करने में संसाधनों का उपयोग किया।

TESS-India OER भारतीय पाठ्यक्रम और संदर्भों के अनुकूल भारतीय तथा अंतर्राष्ट्रीय लेखकों के सहयोग से तैयार किये गये है और ये ऑनलाइन तथा प्रिंट रूप में उपयोग के लिए उपलब्ध हैं *(http://www.tess-india.edu.in)*। *OER* कार्यक्रम से जुड़े प्रत्येक भारतीय राज्य के शिक्षकों के उपयोग के लिए उपयुक्त तथा कई संस्करणों में उपलब्ध हैं तथा शिक्षक व उपयोगकर्ता इन्हे अपनी स्थानीय आवश्यकताओं और सन्दर्भो के अनुरूप इनका स्थानीय करण करके उपयोग कर सकते हैं।

प्रस्तुत संस्करण मध्यप्रदेश की स्थानीय आवश्यकताओं और संदर्भो को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है।

वीडियो संसाधन

इस इकाई में कुछ गतिविधियों के साथ यह आइकॉन (संकेत) दिया गया है*:* *.* इसका अर्थ है कि आप उक्त विशिष्ट विषयवस्तु या शैक्षणिक प्रविधि को और अधिक समझने के लिए *TESS-India* के वीडियो संसाधनों की मदद ले सकते हैं।

TESS-India वीडियो ससांधन (Resources) भारतीय परिप्रेक्ष्य में कक्षाओं में उपयोग की जा सकने वाली सीखने–सिखाने की विविध तकनीकों को दर्शाते हैं। हमें यकीन है कि इनसे आपको इसी प्रकार की तकनीकें अपनी कक्षा में करने में मदद मिलेगी। यदि इन वीडियो संसाधनों तक आपकी पहुँच नहीं हो तो कोई बात नहीं। यह वीडियो पाठ्यपुस्तक का स्थान नहीं लेते, बल्कि उसको पढ़ाने में आपकी मदद करते हैं।

TESS-India के वीडियो संसाधनों को *TESS-India* की वेबसाइट http://www.tess-india.edu.in/ पर ऑनलाइन देखा जा सकता है या डाउनलोड किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त आप इन वीडियो को सीडी या मेमोरी कार्ड में लेकर भी देख सकते हैं।

संस्करण *2.0* *LL06v1*

Madhya Pradesh

तृतीय पक्षों की सामग्रियों और अन्यथा कथित को छोड़कर, यह सामग्री क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन-शेयरएलाइक लाइसेंस के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई है: http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0/

TESS-India is led by The Open University UK and funded by UK aid from the UK government

यह इकाई किस बारे में है

यह इकाई पठन के लिए आपके विद्यार्थियों का उत्साह बढ़ाने में आपकी भूमिका पर केंद्रित है। विद्यार्थियों को पढ़ने में जितना ज्यादा मज़ा आता है, वे उतना ही ज्यादा पढ़ना चाहते हैं। उन्हें पढ़ने के जितने ज्यादा अवसर मिलेंगे, वे पठन में उतने ही बेहतर होते जाएँगे। यह एक अच्छा चक्र है।

पढ़ने वाले एक शिक्षक और अध्ययन करने वाले एक पाठक के रूप में, आप एक महत्वपूर्ण और अनुकरणीय आदर्श हैं और आप अपने विद्यार्थियों को पढ़ने के आनंद के प्रति प्रेरित कर सकते हैं।

इस इकाई में आपका परिचय उन कक्षा अभ्यासों से होगा जो आपके विद्यार्थियों में पढ़ने के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण को विकसित करेंगे, ताकि उनमें पढ़ने की 'इच्छा' और पढ़ने का 'कौशल' हो।

आप इस इकाई से क्या सीख सकते हैं

- आप विद्यार्थियों के लिए एक पठन रोल मॉडल आदर्श पाठक कैसे बनें।
- पठन के लिए आपके विद्यार्थियों के आनंद को विकसित करने वाली गतिविधियों की योजना कैसे बनाएँ।
- विद्यार्थियों कों सहपाठी सहायता और सहयोगी शिक्षण के के लिए जोड़ियों में पठन का आयोजन कैसे करें।

यह तरीका क्यों महत्वपूर्ण है

एक पाठक होने के कई लाभ हैं। पठन मानसिक रूप से प्रेरक होता है। इससे ज्ञान, जागरुकता और समझ बढ़ती है। इससे सुनने और बोलने का कौशल बढ़ता है, और यह अच्छी तरह लिखने की क्षमता पर भी प्रभाव डालता है। जो विद्यार्थियों अच्छी तरह पढ़ना नहीं सीखते, उन्हें उनके लिए उपलब्ध शिक्षण अवसरों से जुड़ने में भी कठिनाई होती है और इस बात का जोखिम भी रहता है कि वे पीछे न छूट जाएँ।

यदि हमें किसी विशिष्ट गतिविधि में आनंद मिलता है, तो हम उसे बार-बार करने के अवसर ढूँढते है हम उस गतिविधि में जितना ज्यादा शामिल होते हैं, हम उसमें उतने ही बेहतर होते जाते हैं। यह बात पठन पर भी उतनी ही अच्छी तरह लागू होती है। अपने विद्यार्थियों को एक आनंददायक तरीके से पढ़ने का अनुभव लेने के ज्यादा से ज्यादा अवसर देकर, आप उन्हें आत्मविश्वासी, आजीवन पाठक बनने की राह पर आगे बढ़ा सकते हैं।

1 एक अनुकरणीय आदर्श बनना

पठन के प्रति विद्यार्थियों के दृष्टिकोण पर उनके शिक्षकों का गहरा प्रभाव पड़ता है। इस इकाई में ऐसे कई तरीकों के बारे में सुझाव दिया गया है, जिनके द्वारा आप पाठ की एक व्यापक श्रेणी को पढ़ने से मिलने वाले आनंद को स्पष्ट रूप से दिखा सकते हैं।

सबसे पहले आप एक ऐसी शिक्षिका की केस स्टडी पढ़ेंगे, जिन्होंने पठन के आनंद से अपने विद्यार्थियों का परिचय करवाने का एक तरीका ढूँढा।

केस स्टडी 1: अखबार पढ़ना

सुश्री राबिया सागर में कक्षा तीन से पाँच के विद्यार्थियों वाले एक बड़े मल्टीग्रेड (बहुस्तरीय) समूह की शिक्षिका हैं। यहाँ वे वर्णन करती हैं कि किस तरह उन्होंने अपनी कक्षा को पठन के आनंद का प्रदर्शन करने के लिए अख़बार का उपयोग किया।

दुर्भाग्य से पारिवारिक जिम्मेदारियों और काम के कारण मुझे अपनी इच्छानुसार पढ़ने का समय नहीं मिल पाता। इसके बावजूद भी मेरे लिए यह बहुत महत्वपूर्ण है कि मैं अपने विद्यार्थियों को पठन के महत्व और आनंद को समझना सिखाऊँ।

इस साल की शुरुआत में एक दिन मेरे विद्यार्थी जब कक्षा में आए, तो मैं एक दैनिक अखबार में एक खबर पढ़ रही थी [टाइम्स ऑफ़ इंडिया, 2014]। जब वे लोग आकर बैठ गए, तो मैंने अखबार नीचे रख दिया और उनसे कहा, 'मैं अभी-अभी सबसे रोचक चीज़ के बारे में पढ़ रही थी! यह खबर भारत के सबसे बड़े फेयरी व्हील "दिल्ली आई' (Delhi Eye) के बारे में है!'

मैंने उन्हें उस जायंट व्हील का एक चित्र दिखाया और अपनी बात जारी रखी: 'इसमें लिखा है कि यहाँ हम ऊपर से कुतुबमीनार, लाल किला, अक्षरधाम मंदिर, लोटस टेम्पल और हुमायूँ का मकबरा जैसे स्मारक देख सकते हैं।' मेरे विद्यार्थी इस खबर से बहुत आकर्षित हुए।

मैंने उन्हें समझाया कि अखबार में पढ़ने के लिए बहुत सारी रोचक बातें होती हैं। मैंने अपने विद्यार्थियों से पूछा कि स्कूल के बाहर वे कितनी बार अखबार देखते हैं। एक या दो विद्यार्थियों ने कहा कि उन्होंने अपनी दुकान में चित्रों और बड़े अक्षरों में लिखी हेडिंग वाले अखबार देखे हैं। एक अन्य विद्यार्थी ने कहा कि उसके पिता हर दिन अखबार पढ़ने सामुदायिक भवन में जाते हैं। इस चर्चा के द्वारा मुझे अपने विद्यार्थियों के बारे में थोड़ी ज्यादा जानकारी पता चली।

उसके बाद से मैं हर सुबह अपने विद्यार्थियों को अख़बार की कोई एक खबर बताने लगी। उनकी रुचि वाली कोई खबर चुनने से पहले हर बार मैं ध्यान रखती थी कि वे मुझे पन्ने पलटाते हुए देखें। यह मेरे लिए भी आनंददायक था, क्योंकि इससे मुझे हर दिन अखबार पढ़ने का मौका मिलता था। मेरे विद्यार्थियों को भी दैनिक या अंतरराष्ट्रीय ख़बरों के बारे में जानने की उत्सुकता रहती थी। एक संक्षिप्त चर्चा के बाद मैं समाचारों को मेरे विद्यार्थियों के ज्ञान और अनुभव के साथ जोड़ पाने में सक्षम हो गई, और साथ ही मैंने उनका परिचय अख़बारों की नई भाषा से भी करवाया।

जल्दी ही मेरी कक्षा में अख़बारों और पत्रिकाओं का ढेर लग गया था, और मैंने अपने विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया कि सुबह अपने सहपाठियों के आने की प्रतीक्षा करते समय वे इन्हें देखें। कुछ समय बाद मैंने तय किया कि मैं हर दिन अपनी कक्षा में विद्यार्थियों को इन्हे पढ़ने के लिए 15 मिनट का समय दूँगी। कुछ विद्यार्थी अकेले पढ़ते थे। कुछ साथ मिलकर पढ़ते थे। कुछ अवसरों पर मैंने सुना कि साथ में पढ़ने वाले विद्यार्थी उसी तरह की अभिव्यक्तियों का उपयोग कर रहे थे, जैसा मैं उनके साथ करती थी, जैसे 'ओह, ये कितना रोचक है!' और 'आओ देखें इसमें क्या लिखा है!' कभी-कभी मैं बड़े विद्यार्थियों से कहती थी कि वे छोटे विद्यार्थियों के साथ पढ़ें। कभी-कभार मैंने उन्हें किसी विशिष्ट शब्द का अर्थ समझाते हुए भी सुना। हाल ही में, मेरे विद्यार्थियों ने एक-दूसरे के लेख सुनाना भी शुरू किया है और वे इस तरह की अभिव्यक्तियों का उपयोग करते हैं, 'क्या तुमने यह पढ़ा है?' इस संक्षिप्त सत्र में मैं अपने विद्यार्थियों की पठन रुचियों और कौशलों का अनौपचारिक अवलोकन कर सकी।

विचार कीजिए

- सुश्री राबिया की अख़बार गतिविधि से उनके विद्यार्थियों ने पठन के बारे में क्या सीखा?
- उनके तरीके के लाभ क्या हैं? क्या इसमें कोई संभावित कमियाँ हैं?
- उनके कौन-से तरीके आप अपनी कक्षा में लागू कर सकते हैं?

सुश्री राबिया ने अपने विद्यार्थियों को अखबार पढ़ने की एक गतिविधि का नमूना दिखाया। उन्होंने उन्हें दिखाया कि वे किस तरह इसकी सामग्री में से उन समाचारों का चयन करके उन्हें दिखाती थी, जो उन्हें विद्यार्थियों के लिए सबसे ज्यादा रोचक प्रतीत होते थे और उन्हें उनके दृष्टिकोण व संबंधित अनुभवों के बारे में बात करने के लिए आमंत्रित करती थी।

हर दिन पढ़ने के लिए थोड़ा समय अलग रखकर, सुश्री राबिया ने अपने विद्यार्थियों को नियमित रूप से यह गतिविधि करने का महत्व समझाया। अपने विद्यार्थियों के लिए अखबार और पत्रिकाएँ उपलब्ध करवाकर उन्होंने विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया कि वे अपनी रुचि की सामग्री चुनें और अपना चयन अपने सहपाठियों के साथ साझा करें। उन्हें बोलकर पढ़ने, चुपचाप पढ़ने या जोड़ियों में बैठकर पढ़ने का अवसर देकर, उन्होंने हर विद्यार्थी को अपने स्तर पर इस गतिविधि से जोड़ा छोटे विद्यार्थियों को पढ़कर सुनाने के लिए बड़े विद्यार्थियों को आमंत्रित करके उन्होंने बड़े विद्यार्थियों के पठन कौशल की जाँच की।

इस गतिविधि की एक कमी यह है कि ज्यादातर अखबारों और पत्रिकाओं को पढ़ने के लिए एक न्यूनतम पठन कौशल आवश्यक होता है, ताकि हम उनसे जुड़ सकें, यहाँ तक कि बुनियादी स्तर पर भी। इसी तरह, कई समाचार के लिए ऐसे ज्ञान और समझ की ज़रूरत होती है, जो शुरुआती प्राथमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों में होना अपेक्षित नहीं है। इसलिए यह गतिविधि छोटे विद्यार्थियों या बहुत शुरुआती पाठकों के लिए उपयुक्त नहीं है।

आपके विद्यार्थियों का स्तर चाहे जो भी हो, लेकिन उन्हें पठन का कुछ न कुछ अनुभव अवश्य होगा। चाहे सकारात्मक हो या नकारात्मक, लेकिन उनके मन में पठन के प्रति कोई न कोई दृष्टिकोण भी अवश्य होगा, जो कि स्कूल में, घर पर या उनके समुदाय में ऐसे अनुभवों पर आधारित होगा। आपके विद्यार्थियों के लिए किस तरह की नियमित पठन गतिविधि कारगर होगी? आप यह कैसे सुनिश्चित कर सकते हैं कि हर विद्यार्थी को शामिल किया गया है? अपने इन विचारों के बारे में अपने सहकर्मी के साथ चर्चा करें।

अगले अनुभाग में, आप कक्षा में 'पुस्तक पर बात' के महत्व के बारे में जानेंगे। यह एक नियमित गतिविधि है, जिसे आप अपने किसी भी पाठ में शामिल कर सकते हैं।

2 पुस्तक पर बात

विचार कीजिए

- आपने ऐसा क्या पढ़ा था, जो बहुत उत्कृष्ट था और जिसे आप अपने किसी मित्र को सुझाएँगे?
- आपने क्या पढ़ना शुरू किया था, जिसे आपने ऊबाऊ या कठिन होने के कारण बीच में ही छोड़ दिया?
- क्या पढ़ने के बारे में आपकी कोई विशिष्ट पसंद या नापसंद है?

इस तरह के प्रश्न 'पुस्तक पर बात' को प्रोत्साहन देते हैं। आपके सभी उत्तर एक पाठक होने के महत्वपूर्ण पहलू हैं। अगले केस स्टडी में आप देखेंगे कि किस तरह एक शिक्षिका पुस्तक पर बात को अपने पाठ में शामिल करती हैं।

केस स्टडी 2: कक्षा में पुस्तक पर बात को प्रोत्साहित करना

श्रीमती रचना भोपाल में कक्षा आठ की शिक्षिका हैं। यहाँ वे बता रही हैं कि उन्होंने किस तरह अपने विद्यार्थियों में पुस्तक पर बात को प्रोत्साहित किया।

पिछले वर्ष तक, मेरे नियमित अध्यापन अभ्यास में अपनी कक्षा को एक पाठ पढ़कर सुनाना और अपने विद्यार्थियों से पाठ्यपुस्तक में उसके लिए दिए गए प्रश्न पूरे करने को कहना शामिल था। स्थानीय DIET में एक कार्यशाला के बाद, मैंने तय किया कि यदि मैं अपने विद्यार्थियों को पठन के प्रति ज्यादा विवेकशील बनाना चाहती हूँ, तो मुझे अपने अभ्यास में परिवर्तन करना होगा।

मैंने सबसे पहले अपनी कक्षा को पढ़कर सुनाने के लिए एक कहानी चुनी। यह NCERT की कक्षा आठ की पाठयपुस्तक की कहानी 'Children at Work' थी *और इस तरह बात बन गई*। जब मैंने पूरी कहानी पढ़ ली, तो मैंने इसके बारे में अपनी प्रतिक्रिया इस तरह दी: 'मुझे यह कहानी बहुत दुखद लगती है, क्योंकि मुझे बाल श्रमिकों के बारे में पढ़ना पसंद नहीं है। हालांकि, उस बच्चे वेलू के लिए यह एक अच्छा रोमांच है। न जाने उसका क्या होगा। आपका क्या विचार है?'

इसके बाद मैंने अपने विद्यार्थियों से कहा कि वे दो मिनट तक अपने साथी के साथ इस कहानी के बारे में बात करें। मैंने उन्हें इस तरह के प्रश्नों के साथ संकेत दिया कि 'आपको क्या अच्छा लगा?', 'आपको क्या अच्छा नहीं लगा?' और 'आपको क्या कठिन लगा?' अंत में, मैंने हर विद्यार्थी को कहानी के बारे में उनकी प्रतिक्रिया सभी को बताने के लिए आमंत्रित किया।

पहले पहल, मेरे विद्यार्थियों को कहानियों पर अपनी प्रतिक्रया के बारे में बात करने में कठिनाई महसूस हुई, क्योंकि उन्हें इस तरह पाठ के प्रति अपनी राय और प्रतिक्रिया व्यक्त करने की आदत नहीं थी। हालांकि, इस तरह की गतिविधि को कई काल्पनिक और गैर काल्पनिक पठन पाठ के साथ दोहराने के बाद वे अपनी राय साझा करने के प्रति ज्यादा सहज हो गए। अब वे न सिर्फ आत्मविश्वास के साथ यह कह देते हैं कि उन्हें पाठ अच्छा नहीं लगा, बल्कि वे इसका कारण भी समझा सकते हैं। वे अब पाठ पर चर्चा करते समय अपने पुराने ज्ञान का भी उपयोग करने लगे हैं और वे पाठ को अपने खुद के अनुभवों और साथ ही उन्होंने पहले जिन पाठ के बारे में बात और चर्चा की थी, उनसे जोड़ने लगे हैं। जब मेरे विद्यार्थी खुलकर पाठ के बारे में इस तरह बात करते हैं, तो मैं उनकी समझ का मूल्यांकन विस्तार से कर सकती हूँ, जो कि केवल पाठ्यपुस्तक के अभ्यास से संभव नहीं है।

हालांकि मैंने एक मार्गदर्शक के रूप में पाठ्यपुस्तक के प्रश्नों का उपयोग जारी रखा है, लेकिन हम कक्षा में जो कुछ भी पढ़ते हैं, उस पर ज्यादा खुलकर चर्चा करने की मैं हमेशा अनुमति देती हूँ।

विचार कीजिए

- आपके अनुसार कक्षा में पुस्तक पर बात करके श्रीमती रचना के विद्यार्थी क्या सीख रहे हैं?
- इस सत्र में विद्यार्थियों की निगरानी करने से वे उनके पठन विकास के बारे में क्या सीख रही हैं?

पठन की समझ अपने आप विकसित नहीं होती; यह सिखाई जानी चाहिए। यह सर्वश्रेष्ठ ढंग से तब पूरी होती है, जब शिक्षक अपने विचारों को व्यक्त करके और पाठ के अर्थ के बारे में अपने विद्यार्थियों से चर्चा करके इस अवधारणा प्रक्रिया का नमूना प्रस्तुत करते हैं।

विद्यार्थियों ने खुद जो पाठ सुना या पढ़ा है, जब उन्हें उसके बारे में बात करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, तो उनमें आत्मविश्वास विकसित होता है कि वे अपनी प्रतिक्रियाओं और व्याख्याओं के बारे में बात कर सकें।

वयस्क होने के कारण, आमतौर पर हम स्वयं चुन सकते हैं कि हमें क्या पढ़ना है। अक्सर हम किसी विशिष्ट तरह के पाठ को अन्य पाठ की तुलना में ज्यादा पसंद करते हैं। हम अपने पठन को प्रदर्शित करते हैं और दूसरों के साथ इस पर चर्चा करते हैं। हमें अपने विद्यार्थियों को भी ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए - कि वे उनकी पसंद की किताबें चुनें और वे जो भी पढ़ते हैं, उस पर बुद्धिमानी से प्रतिक्रिया दें।

गतिविधि 1: पुस्तक पर बात का सत्र

चित्र *1* कक्षा में एक पुस्तक के बारे में बात करना।

अपनी कक्षा में पुस्तक पर बात करने के लिए एक संक्षिप्त सत्र की योजना बनाएँ। यह 30 मिनट से ज्यादा समय की नहीं होना चाहिए।

एक छोटा-सा काल्पनिक या गैर काल्पनिक पाठ चुनें। यह कोई कहानी, अखबार का कोई तथ्यात्मक लेख, किसी नाटक की स्क्रिप्ट या कोई कविता हो सकती है। आप चाहे जो भी पाठ चुनते हैं, सबसे पहले उसमें अपरिचित शब्दावली का अनुमान लगा लें। शुरू में ही विषय का परिचय देने और यदि कोई अज्ञात शब्द हैं, तो उनका अर्थ समझाने से आप अपने विद्यार्थियों की परेशानी को कम करने में मदद करेंगे और आगे जो आने वाला है, उसे समझने में उन्हें इससे सहायता मिलेगी।

पाठ पढ़कर सुनाने के बाद, संक्षेप में अपने विद्यार्थियों को बताएँ कि इसके बारे में आपकी क्या राय है और इसे पढ़कर आपके मन में क्या विचार आए। हालांकि इस तरह पुस्तक पर बात का आदर्श प्रस्तुत करना महत्वपूर्ण है, लेकिन शुरुआत में इसे ध्यानपूर्वक करना सर्वोत्तम होता है, ताकि आप उस पाठ के बारे में आपके विद्यार्थियों की राय को बहुत ज्यादा प्रभावित न कर दें। इसके बाद अपने विद्यार्थियों को उनकी प्रतिक्रिया देने के लिए आमंत्रित करने हेतु उनसे पूछें (उदाहरण के लिए):

- उन्हें पाठ के बारे में क्या अच्छा लगा या नहीं लगा?
- पात्रों के बारे में उनके क्या विचार हैं?
- क्या इसमें कुछ ऐसा था, जिसे समझना कठिन हो?
- क्या वे किसी और को इसे पढ़ने का सुझाव देंगे?

आपके विद्यार्थियों की सभी प्रतिक्रियाओं के प्रति रुचि दर्शाएँ।

यदि आपकी कक्षा बड़ी है, तो हर दिन विद्यार्थियों के अलग अलग समूह के साथ पुस्तक पर बात के सत्र की योजना बनाएँ। जब आप इस छोटे समूह के साथ समय बिता रहे हों, तब शेष कक्षा को पुस्तक पर बात के पठन से संबंधित कोई स्वतंत्र कार्य करने को दें। कक्षा को विद्यार्थियों के स्तर के अनुसार बाँटकर, आप प्रत्येक समूह के लिए उपयुक्त पाठ का चयन कर सकते हैं।

पुस्तक पर बात के सत्र केवल उस पाठ तक सीमित नहीं होने चाहिए, जो आप अपने विद्यार्थियों को पढ़कर सुनाते हैं, बल्कि इनका विस्तार करके उन पाठ को भी शामिल किया जा सकता है, जिन्हें विद्यार्थी स्वयं पढ़ते हैं।

इस चरण में मुख्य संसाधन 'सीखने के लिए बात करना' पढ़ना आपके लिए मददगार हो सकता है।

वीडियो: सीखने के लिए बातचीत

गतिविधि 2: विद्यार्थियों की पुस्तक समीक्षाएँ
आप पुस्तक पर बात के सत्र का विस्तार करने के लिए अपने विद्यार्थियों से कह सकते हैं कि उन्होंने जो पढ़ा है, उस पर वे एक संक्षिप्त समीक्षा लिखें। चित्र 2 में दिए गए पुस्तक समीक्षा नमूनाको आप अपनी इच्छानुसार अनुकूलित कर सकते हैं। जैसा कि कक्षा की चर्चाओं में होता है, आपके विद्यार्थियों द्वारा इन समीक्षाओं में व्यक्त किए गए सभी विचारों को स्वीकार किया जाना चाहिए और महत्व दिया जाना चाहिए।

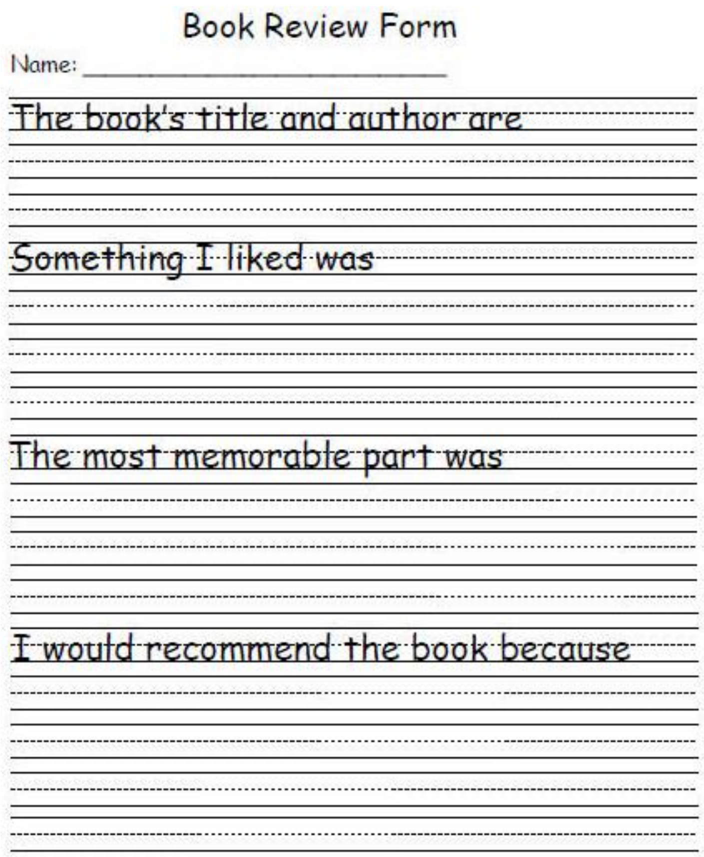
Book Review Form

Name: ______________________

The book's title and author are

Something I liked was

The most memorable part was

I would recommend the book because

चित्र 2 पुस्तक समीक्षा नमूना। (स्त्रोत: एजुकेशन वर्ल्ड, दिनांक नहीं)

(पुस्तक का नाम एवं लेखक)

(जो मुझे पसंद आया)

(विशेष स्मरणीय अंश)

(दूसरों को पढ़ने के लिए मेरा मत)

अगले अनुभाग में, आप समझ और आनंद में सहायता के लिए जोड़ियों में पठन के अभ्यास को देखेंगे।

3 जोड़ियों में पढ़ना

अकेले पढ़ने की तुलना में साथ मिलकर पढ़ना ज्यादा लाभदायक हो सकता है, और यह मज़ेदार भी हो सकता है।

जोड़ियों में पठन से एक सहायक, सहयोगी शिक्षण संरचना मिलती है,यह तब और अधिक आदर्श होती है, जब एक विद्यार्थी दूसरे विद्यार्थी जितना आत्मविश्वासी पाठक न हो विद्यार्थी एक दूसरे के लिए बहुत सक्षम और संवेदनशील 'शिक्षक' हो सकते हैं। अपने विद्यार्थियों को इस प्रकार व्यवस्थित करने के बारे में अधिक जानकारी के लिए संसाधन 1, 'जोड़ियों में कार्य का उपयोग करना' पढ़ें। देखें।

वीडियो: जोड़ी में किये गये कार्य का उपयोग करना

जोड़ियों में कार्य के द्वारा, दो विद्यार्थी एक पुस्तक को साझा करते हैं और बारी-बारी से एक-एक वाक्य, पैराग्राफ या पृष्ठ पढ़ते हैं (चित्र 3)। पहला पाठक पढ़ता है, जबकि दूसरा पाठक उसे सुनता है और साथ-साथ बढ़ता है। जहाँ पहला पाठक रुकता है, दूसरा पाठक उसके आगे से पढ़ना जारी रखता है। यदि दोनों में से किसी को भी कठिनाई होती है या वे गलती करते हैं, तो उनका साथी उनकी सहायता कर सकता है या उनकी गलती सुधार सकता है।

चित्र *3* जोड़ियों में पठन।

आप समान पठन क्षमता वाले विद्यार्थियों की जोड़ी बना सकते हैं या आप अधिक वाक्पटु विद्यार्थियों की कम वाक्पटु विद्यार्थियों के साथ, या बहुस्तर कक्षा में बड़े विद्यार्थियों की छोटे विद्यार्थियों के साथ जोड़ी बना सकते हैं। यदि जोड़ियों में पठन सुनियोजित हो, तो इसका उपयोग विद्यार्थियों की बड़ी संख्या के साथ किया जा सकता है।

अब एक शिक्षक का केस स्टडी पढ़ें, जो द्विभाषी विद्यार्थियों के लिए जोड़ियों में पठन के लाभों को जानते हैं।

केस स्टडी 3: द्विभाषी पठन सहायता के लिए जोड़ियों में कार्य

श्री राय मध्यप्रदेश के एक ग्रामीण विद्यालय में कक्षा पाँच को पढ़ाते हैं।

मेरे कुछ विद्यार्थी उनके घर की भाषा के रूप में बुन्देली बोलते हैं। वे स्कूल में हिन्दी समझने और बोलने में लगातार प्रगति कर रहे हैं, लेकिन उनमें ऊँची आवाज़ में पढ़ने का आत्मविश्वास नहीं है। मैंने देखा कि मेरी एक विद्यार्थी सुरुभि कक्षा में पुस्तकों को देखा करती थी। ऐसा लगता था कि वह चित्रों में खो जाती थी, लेकिन प्रतीत होता था कि वह पृष्ठ पर लिखे शब्दों को नहीं समझती है।

एक दिन, जब वह पुस्तक देख रही थी, तो मैं उसके पास बैठ गया और उससे पूछा कि वह कहानी किस बारे में है। वह मेरा प्रश्न समझ गई, लेकिन उत्तर देने में उसे कठिनाई महसूस हुई। इसलिए मैंने उसके साथ पुस्तक का कुछ भाग पढ़ा और ऐसा करते समय शब्दों और चित्रों की ओर संकेत करता गया। मैंने उससे कुछ सरल प्रश्न पूछे और वह बुन्देली व हिन्दी को मिलाकर उत्तर देती रही।

मेरे मन में विचार आया कि बुन्देली और हिन्दी बोलने वाले बड़ी उम्र के एक विद्यार्थी से सुरुभि को पुस्तक पढ़कर सुनाने को कहा जाए। ऐसा करते समय वह सुरुभि के घर की भाषा में उसे अर्थ भी समझाता जा रहा था। सुरुभि ने ध्यान से सुना और उसके प्रश्नों का उत्तर बुन्देली मिश्रित हिंदी में दिया।

मैंने आकर्षक चित्रों वाली ऐसी और भी किताबें ढूँढी, जिनके बारे में मुझे लगा कि वे सुरुभि को पसंद आएंगी। मुझे एक ऐसी किताब मिली, जिसमें प्रसिद्ध लोक कथाएँ शामिल थीं और बार-बार आने वाले वाक्यांशों वाला एक सरल रीडर था। मैंने एक सहकर्मी से उन कहानियों का बुन्देली में अनुवाद करने को कहा ताकि सुरुभि उन्हें हिन्दी और उसके घर की भाषा दोनों में लिखा हुआ देख सके। धीरे-धीरे सुरुभि हिन्दी से परिचित होती गई और इन पुस्तकों को ज्यादा अच्छी तरह समझने लगी। अब वह ज्यादा लंबे वाक्यों वाली कुछ ज्यादा कठिन किताबें पढ़ने लगी है। उसकी प्रगति को देखकर बहुत संतोष होता है।

विचार कीजिए

- क्या आपको लगता है कि स्कूल में अपने घर की भाषा को मिलाना विद्यार्थियों के लिए सही है? क्यों या क्यों नहीं?
- बुन्देली जानने वाले एक विद्यार्थी के साथ जोड़ी में पठन से सुरुभि को क्यों लाभ हुआ?

हम एक विविधतापूर्ण, बहुभाषी समाज में रहते हैं, जहाँ सभी भाषाएँ मूल्यवान संसाधन हैं। अपने विद्यार्थियों को उनके घर की भाषा का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करने से उन्हें स्कूल में आत्मविश्वासी और सहज महसूस करने में मदद मिल सकती है, और इससे उन्हें अपनी हिन्दी सुधारने में मदद मिल सकती है। भले ही आप वह भाषा न बोलते हों, जो आपके विद्यार्थियों के घर की भाषा है, लेकिन स्कूल में ऐसे कुछ विद्यार्थी हो सकते हैं, जो दूसरों की मदद कर सकें। जिन विद्यार्थियों के घर की भाषा एक ही है, उन्हें जोड़ियों में या छोटे समूहों में पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें। इस तरह वे स्कूल की भाषा के विकास में सहायता करने के लिए उनके घर की भाषा का उपयोग करके एक दूसरे की मदद कर सकते हैं।

अगली गतिविधि इस तरह तैयार की गई है, ताकि आपको अपनी कक्षा में जोड़ियों में पठन का उपयोग शामिल करने में मदद मिले।

गतिविधि 3: जोड़ियों में पठन का परिचय देना और आयोजन करना

यह गतिविधि जोड़ियों में या तीन या चार के छोटे समूहों में की जा सकती है। पहले से ही यह निर्धारित कर लें कि आप किन विद्यार्थियों की जोड़ियाँ या समूह बनाना चाहते हैं। क्या उनका चयन क्षमताओं में समानता के आधार पर किया जाएगा या अंतर के आधार पर? चुनें कि विद्यार्थी क्या पढ़ेंगे, और सुनिश्चित करें कि आपके पास उस पाठ की पर्याप्त प्रतियाँ हों।

सबसे पहले जोड़ियों में पढ़कर उदाहरण बताएं, ताकि आपके विद्यार्थी समझ जाएँ कि आप उनसे क्या करने की अपेक्षा रखते हैं। विद्यार्थियों को वह पुस्तक - या अनुच्छेद - दिखाएँ, जो उन्हें पढ़ना है और उनमें से एक को आपका साथी बनने के लिए चुनें। यह समझाएँ कि सबसे पहले आप साथ मिलकर एक अनुच्छेद पढ़कर सुनाएँगे और इसके बाद पठन जारी रखने के लिए बारी-बारी से पढ़ेंगे। सबसे पहले एक साथ पहला अनुच्छेद पढ़ें। इसके बाद विद्यार्थियों को अगला अनुच्छेद पढ़ना जारी रखने दें। इसके बाद फिर बदलें और अगला अनुच्छेद खुद पढ़ें। इस तरह कई बार बारी-बारी से पढ़ते जाएँ।

अब पहले विद्यार्थी के साथ जोड़ी बनाने के लिए एक अन्य विद्यार्थी को चुनें और उन्हें यह प्रदर्शित करने दें कि किस तरह जोड़ियों में साथ मिलकर पढ़ना है। यदि आपकी योजना बड़े समूह बनाने की है, तो तीसरे या चौथे विद्यार्थी को भी इसमें जुड़ने को कहें।

अपने विद्यार्थियों को बताएँ कि यदि उनका साथी या समूह का सदस्य कोई कठिनाई महसूस करता है, तो उसकी मदद करने से पहले उन्हें कुछ सेकंड तक प्रतीक्षा करनी चाहिए, ताकि उसे समस्या को सुलझाने का अवसर मिल सके। उन्हें समझाएँ कि पूरा उत्तर बता देने के बजाय उस विद्यार्थी को कोई संकेत देना - जैसे शब्द की पहली ध्वनि – संभावित पूर्ण उत्तर है।

शुरू में, जोड़ियों में पठन कुल दस मिनट का होना चाहिए, और जब आपके विद्यार्थी इस गतिविधि से परिचित हो जाते हैं, तो धीरे-धीरे इसे अधिकतम 30 मिनट तक बढ़ाया जा सकता है। अपने विद्यार्थियों से कहें कि वे धीमी आवाज़ में एक-दूसरे को पढ़कर सुनाएँ, ताकि इससे उनके सहपाठियों को परेशानी न हो।

कक्षा का चक्कर लगाएँ और ध्यानपूर्वक सुनकर यह जाँचें कि क्या आपके विद्यार्थी इस गतिविधि को समझ गए हैं। जिन्हें पढ़ने में कठिनाई आ रही हो, उनकी सहायता करें। इस बात को दर्ज करें कि किन विद्यार्थियों ने एक साथ काम किया है, और इसका अवलोकन करें कि वे ऐसा कितनी अच्छी तरह कर पाते हैं। कुछ विद्यार्थीएक-दूसरे के साथ विशिष्ट रूप से उपयुक्त हो सकते हैं, लेकिन समय-समय पर जोड़ियों या समूहों में बदलाव करना भी मददगार हो सकता है।

इस गतिविधि के बाद, अपने विद्यार्थियों से पूछें कि क्या उन्हें इस गतिविधि में मज़ा आया और यह उन्हें उपयोगी लगी या नहीं। एक दूसरे की मदद करने के लिए उनकी तारीफ़ करें। जोड़ियों में पठन के बाद आप पाठ के बारे में पुस्तक पर बात का एक संक्षिप्त सत्र भी आयोजित कर सकते हैं।

4 सारांश

यह इकाई स्कूल में और स्कूल के बाहर पाठ की अनेक श्रेणियों के उत्साही, आत्मविश्वासी और चिंतनशील पाठक बनने में आपके विद्यार्थियों को सक्षम बनाने में आपकी भूमिका पर केंद्रित थी। आनंददायक पठन का नमूना प्रस्तुत करने में आपकी भूमिका इस गतिविधि में विद्यार्थियों की सकारात्मक सहभागिता के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

इस इकाई में ऐसी कई गतिविधियों का सुझाव दिया गया है, जिनका उपयोग आप कक्षा में पठन के विकास की सहायता के लिए लगातार वृद्धि सकते हैं। इनमें पुस्तक पर चर्चा शामिल है, जिससे विद्यार्थियों को अपने पठन के बारे में अपनी प्रतिक्रिया साझा करने का अवसर मिलता है और साथ ही

इसमें जोड़ियों में पठन शामिल है, जहाँ विद्यार्थी साथ मिलकर कुछ पढ़ने के बाद उस पर एक-दूसरे से चर्चा कर सकते हैं। जैसा कि कई गतिविधियों के साथ होता है, पठन एक कौशल है, जो अभ्यास के द्वारा सुधरता जाता है और आपके विद्यार्थी जो भी पाठ पढ़ते हैं, यदि उन्हें उसे पढ़ने और उसके बारे में बात करने में मज़ा आता है, तो इस बात की ज्यादा संभावना है कि वे इसका अभ्यास करेंगे।

संसाधन

संसाधन 1: जोडियों में काम का उपयोग करना

प्रतिदिन की बहुत से लोग साथ–साथ काम करते हैं, और साथ-साथ दूसरो से बोलते हैं और उनकी बात सुनते हैं, तथा देखते हैं कि वे क्या करते हैं और कैसे करते हैं। लोग इसी तरह से सीखते हैं। जब हम दूसरों से बात करते हैं, तो हमें नए विचारों और जानकारियों का पता चलता है। कक्षाओं में अगर सब कुछ शिक्षक पर केंद्रित होता है, तो अधिकतर विद्यार्थियों को अपनी पढ़ाई को प्रदर्शित करने के लिए या प्रश्न करने के लिए पर्याप्त समय नहीं मिलता। कुछ विद्यार्थी केवल संक्षिप्त उत्तर दे सकते हैं और कुछ बिल्कुल भी नहीं बोल सकते। बड़ी कक्षाओं में, स्थिति और भी बदतर है, जहाँ बहुत कम विद्यार्थी ही कुछ बोलते हैं।

जोडियों में कार्य का उपयोग क्यों करें?

जोड़ियों में कार्य विद्यार्थियों के लिए ज्यादा बात करने और सीखने का एक स्वाभाविक तरीका है। यह उन्हें विचार करने और नए विचारों तथा भाषा को कार्यान्वित करने का अवसर देता है। यह विद्यार्थियों को नए कौशलों और संकल्पनाओं के माध्यम से काम करने और बड़ी कक्षाओं में भी अच्छा काम करने का सुविधाजनक तरीका प्रदान करता है।

जोड़ियों में कार्य करना सभी आयु वर्गों और लोगों के लिए उपयुक्त होता है। यह विशेष तौर पर बहुभाषी, बहुग्रेड कक्षाओं में उपयोगी होता है, क्योंकि एक दूसरे की सहायता करने के लिए जोड़ियों को बनाया जा सकता है। यह सर्वश्रेष्ठ रूप से तब काम करता है जब आप विशिष्ट कार्यों की योजना बनाते हैं और यह सुनिश्चित करने के लिए ऐसी प्रक्रियाओं की स्थापना करते हैं जिनमें आपके सभी विद्यार्थी शिक्षण में शामिल हों और प्रगति कर रहे हों। एक बार इन ऐसी प्रक्रियाओं को स्थापित कर लिए जाने के बाद, आपको पता लगेगा कि विद्यार्थी तुरंत जोड़ियों में काम करने के अभ्यस्त हो जाते हैं और इस तरह सीखने में आनंद लेते हैं।

जोड़ियों में कार्य करने के लिए काम

आप शिक्षण के अभीष्ट परिणाम के आधार पर विभिन्न प्रकार के कामों का जोड़ियों में कार्य करने के लिए उपयोग कर सकते हैं। जोड़ियों में कार्य को अवश्य ही स्पष्ट और उपयुक्त होना चाहिए ताकि सीखने में अकेले काम करने के मुकाबले साथ मिलकर काम करने में अधिक मदद मिले। अपने विचारों के बारे में बात करके, आपके विद्यार्थी स्वतः स्वयं को और विकसित करने के बारे में विचार करेंगे।

जोड़ियों में कार्य करने में शामिल हो सकते हैं:

- 'विचार करें-जोड़ी बनाए-साझा करें': विद्यार्थी किसी समस्या या मुद्दे के बारे में खुद ही विचार करते हैं और फिर दूसरे विद्यार्थियों के साथ अपने उत्तर साझा करने से पूर्व संभावित उत्तर निकालने के लिए जोड़ियों में कार्य करते हैं। इसका उपयोग वर्तनी, परिकलनों के जरिये कामकाज, प्रवर्गों या क्रम में चीजों को रखने, विभिन्न दृष्टिकोण प्रदान करने, कहानी आदि का पात्र होने का अभिनय करने आदि के लिए किया जा सकता है।
- जानकारी साझा करना: आधी कक्षा को विषय के एक पहलू के बारे में जानकारी दी जाती है; और शेष आधी कक्षा को विषय के भिन्न पहलू के बारे में जानकारी दी जाती है। फिर वे समस्या का हल निकालने के लिए या निर्णय करने के लिए अपनी जानकारी को साझा करने के लिए जोड़ो में कार्य करते हैं।
- सुनने जैसे कौशलों का अभ्यास करना: एक विद्यार्थी कहानी पढ़ सकता है और दूसरा प्रश्न करता है; एक विद्यार्थी अंग्रेजी में अनुच्छेद पढ़ सकता है, जबकि दूसरा इसे लिखने का प्रयास करता है; एक विद्यार्थी किसी तस्वीर या डायग्राम का वर्णन कर सकता है जबकि दूसरा विद्यार्थी वर्णन के आधार पर इसे बनाने की कोशिश करता है।
- निर्देश: एक विद्यार्थी कार्य पूरा करने के लिए दूसरे विद्यार्थी हेतु निर्देश पढ़ सकता है।
- कहानी सुनाना या भूमिका अदा करना: विद्यार्थी जो भाषा वे सीख रहे हैं, उसमें कहानी या संवाद बनाने के लिए जोड़ों में कार्य कर सकते हैं।

सभी को शामिल करते हुए जोड़ियों का प्रबंधन करना

जोड़ियों में कार्य करने का अर्थ सभी को काम में शामिल करना है। चूंकि विद्यार्थी भिन्न होते हैं, इसलिए जोड़ों का प्रबंधन इस तरह से करना चाहिए कि प्रत्येक को जानकारी हो कि उन्हें क्या करना है, वे क्या सीख रहे हैं और आपकी अपेक्षाएं क्या हैं। अपनी कक्षा में जोड़ियों में कार्य को करने के लिए, आपको निम्नलिखित काम करने होंगे:

- उन जोड़ों का प्रबंधन करना जिनमें विद्यार्थी काम करते हैं। कभी-कभी विद्यार्थी मैत्री जोड़ों में काम करेंगे; कभी-कभी वे काम नहीं करेंगे। सुनिश्चित करें कि उन्हें जानकारी है कि आप उनके सीखने का अधिकतम उपयोग करने में सहायता करने के उद्धेश्य से जोड़ें कर रहे हैं।
- अधिकतम चुनौती पेश करने के लिए, कभी-कभी आप मिश्रित योग्यता वाले और भिन्न भाषायी विद्यार्थियों की जोड़ियां बना सकते हैं ताकि वे एक दूसरे की मदद कर सकें; किसी समय आप एक स्तर पर काम करने वाले विद्यार्थियों की जोड़ियां बना सकते हैं।
- रिकॉर्ड रखें ताकि आपको अपने विद्यार्थियों की योग्यताओं का पता हो और आप उसके अनुसार उनकी जोड़ियां बना सकें।
- आरंभ में, विद्यार्थियों को पारिवारिक और सामुदायिक संदर्भों से उदाहरण लेकर, जहाँ लोग सहयोग करते हैं, जोड़े में काम करने के फायदे बताएं।
- आरंभिक कार्य को संक्षिप्त और स्पष्ट रखें।
- यह सुनिश्चित करने के लिए कि विद्यार्थी जोड़े ठीक वैसे ही काम कर रहे हैं जैसा आप चाहते हैं, उन पर नजर रखें।
- विद्यार्थियों को उनके जोड़े में उनकी भूमिकाएँ या जिम्मेदारियाँ प्रदान करें, जैसे कि किसी कहानी से दो पात्र, या साधारण लेबल जैसे '1' और '2', या 'क' और 'ख'। यह कार्य उनके एक दूसरे का सामना करने से पूर्व करें ताकि वे सुनें।
- सुनिश्चित करें कि विद्यार्थी एक दूसरे के सामने बैठने के लिए आसानी से मुड़ या घूम सकें।

जोड़ियों में कार्य के दौरान, विद्यार्थियों को बताएँ कि उनके पास प्रत्येक काम के लिए कितना समय है और उनकी नियमित जाँच करते रहें। उन जोड़ों की प्रशंसा करें जो एक दूसरे की मदद करते हैं और काम पर बने रहते हैं। जोड़ों को आराम से बैठने और अपने खुद के हल ढूंढने का समय दें – विद्यार्थियों को विचार करने और अपनी योग्यता दिखाने से पूर्व ही जल्दी से उनके साथ शामिल होने का प्रलोभन हो सकता है। अधिकांश विद्यार्थी हरेक के बात करने और काम करने के वातावरण का आनंद लेते हैं। जब आप कक्षा में देखते हुए और सुनते हुए घूम रहे हों तो नोट बनाएं कि कौन से विद्यार्थी एक साथ आराम में हैं, हर उस विद्यार्थी के प्रति सचेत रहें जिसे शामिल नहीं किया गया है, और किसी भी सामान्य गलतियों, अच्छे विचारों या सारांश के बिंदुओं को नोट करें।

कार्य के समाप्त होने पर आपकी भूमिका उनके बीच की कड़ियां जोड़ने की है जिनको विद्यार्थियों ने बनाया है। आप कुछ जोड़ों का चुनाव उनका काम दिखाने के लिए कर सकते हैं, या आप उनके लिए इसका सार प्रस्तुत कर सकते हैं। विद्यार्थियों को एक साथ काम करने पर उपलब्धि की भावना का एहसास करना पसंद आता है। आपको हर जोड़े से रिपोर्ट लेने की जरूरत नहीं है – इसमें काफी समय लगेगा - लेकिन आप उन विद्यार्थियों का चयन करें जिनके बारे में आपको अपने अवलोकन से पता है कि वे कुछ सकारात्मक योगदान करने में सक्षम होंगे और जिससे दूसरों को सीखने को मिलेगा। यह उन विद्यार्थियों के लिए एक अवसर हो सकता है जो आमतौर पर अपना विश्वास कायम करने हेतु योगदान करने में संकोच करते हैं।

यदि आपने विद्यार्थियों को हल करने के लिए कोई समस्या दी है, तो आप कोई संभावित हल भी दे सकते हैं और फिर उनसे जोड़ियों में उत्तर में सुधार करने के संबंध में चर्चा करने के लिए कह सकते हैं। इससे अपने खुद के शिक्षण के बारे में विचार करने और अपनी गलतियों से सीखने में उनकी सहायता होगी।

यदि आप जोड़ियो़ं में कार्य करने के लिए नए हैं, तो उन बदलावों के संबंध में नोट बनाना महत्वपूर्ण है जिन्हें आप कार्य, समयावधि या जोड़ियों के संयोजनों में करना चाहते हैं। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि आप इसी तरह सीखेंगे और इसी सीखकर अपने अध्यापन में सुधार कर सकेंगे। जोड़ियो़ं में कार्य का सफल आयोजन करना स्पष्ट निर्देशों और उत्तम समय प्रबंधन के साथ-साथ संक्षिप्त सार संक्षेपण से जुड़ा है – यह सब अभ्यास से आता है।

अतिरिक्त संसाधन

- 'Book-talk' by Pie Corbett: http://webfronter.com/lewisham/primarycommunity/menu1/Writing/Talk_for_Writing/Booktalk_by_Pie_Corbett
- Booktrust is an independent UK reading and writing charity. It provides resources and tools to support professionals in helping both children and adults to develop in their reading and writing journey: http://www.booktrust.org.uk/
- NCERT books for children: http://www.ncert.nic.in/publication/children_books/children_books.html
- Pratham Books: http://www.prathambooks.org/
- 'Children's literature from India and the Indian diaspora', a post on Pratham Books' blog: http://blog.prathambooks.org/2010/10/childrens-literature-from-india-and.html
- Dasgupta, A. (1995) *Telling Tales: Children's Literature in India*. London: Taylor and Francis.
- A useful article about children's literature in India: http://isahitya.com/index.php/77-special-articles/269
- 'How to teach … reading for pleasure', from a UK website that contains some useful ideas and further links: http://www.theguardian.com/teacher-network/teacher-blog/2013/dec/16/reading-for-pleasure-reluctant-readers-schools-resources
- N'Namdi, K.A. (2005) *Guide to Teaching Reading at the Primary School Level*. Paris: UNESCO.
- *New Approaches to Literacy Learning* by V. Elaine Carter: http://unesdoc.unesco.org/images/0012/001257/125767eb.pdf

संदर्भ/संदर्भग्रंथ सूची

Clark, C. and De Zoysa, S. (2011) *Mapping the Interrelationships of Reading Enjoyment, Attitudes, Behaviour and Attainment: An Exploratory Investigation*. London: National Literacy Trust.

Clark, C. and Poulton, L. (2011) *Is Four the Magic Number? Number of Books Read in a Month and Young People's Wider Reading Behaviour*. London: National Literacy Trust.

Clark, C. and Rumbold, K. (2006) *Reading for Pleasure: A Research Overview*. London: The National Literacy Trust.

Education World (undated) 'Book review form' (online). Available from: http://www.educationworld.com/a_lesson/template/book-review.shtml (accessed 23 October 2014).

Times of India (2014) 'Giant wheel a monumental treat' (online), 3 October. Available from: http://timesofindia.indiatimes.com/city/delhi/Giant-wheel-a-monumental-treat/articleshow/44155864.cms (accessed 23 October 2014).

अभिस्वीकृतियाँ

यह सामग्री क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन-शेयरएलाइक लाइसेंस (http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0/) के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई है, जब तक कि अन्यथा निर्धारित न किया गया हो। यह लाइसेंस TESS-India, OU और UKAID लोगो के उपयोग को वर्जित करता है, जिनका उपयोग केवल TESS-India परियोजना के भीतर अपरिवर्तित रूप से किया जा सकता है।

कॉपीराइट के स्वामियों से संपर्क करने का हर प्रयास किया गया है। यदि किसी को अनजाने में अनदेखा कर दिया गया है, तो पहला अवसर मिलते ही प्रकाशकों को आवश्यक व्यवस्थाएं करने में हर्ष होगा।

वीडियो (वीडियो स्टिल्स सहित): भारत भर के उन अध्यापक शिक्षकों, मुख्याध्यापकों, अध्यापकों और विद्यार्थियों के प्रति आभार प्रकट किया जाता है, जिन्होंने उत्पादनों में दि ओपन यूनिवर्सिटी के साथ काम किया है।